मेरी कलम से

चतुर्थ संस्करण

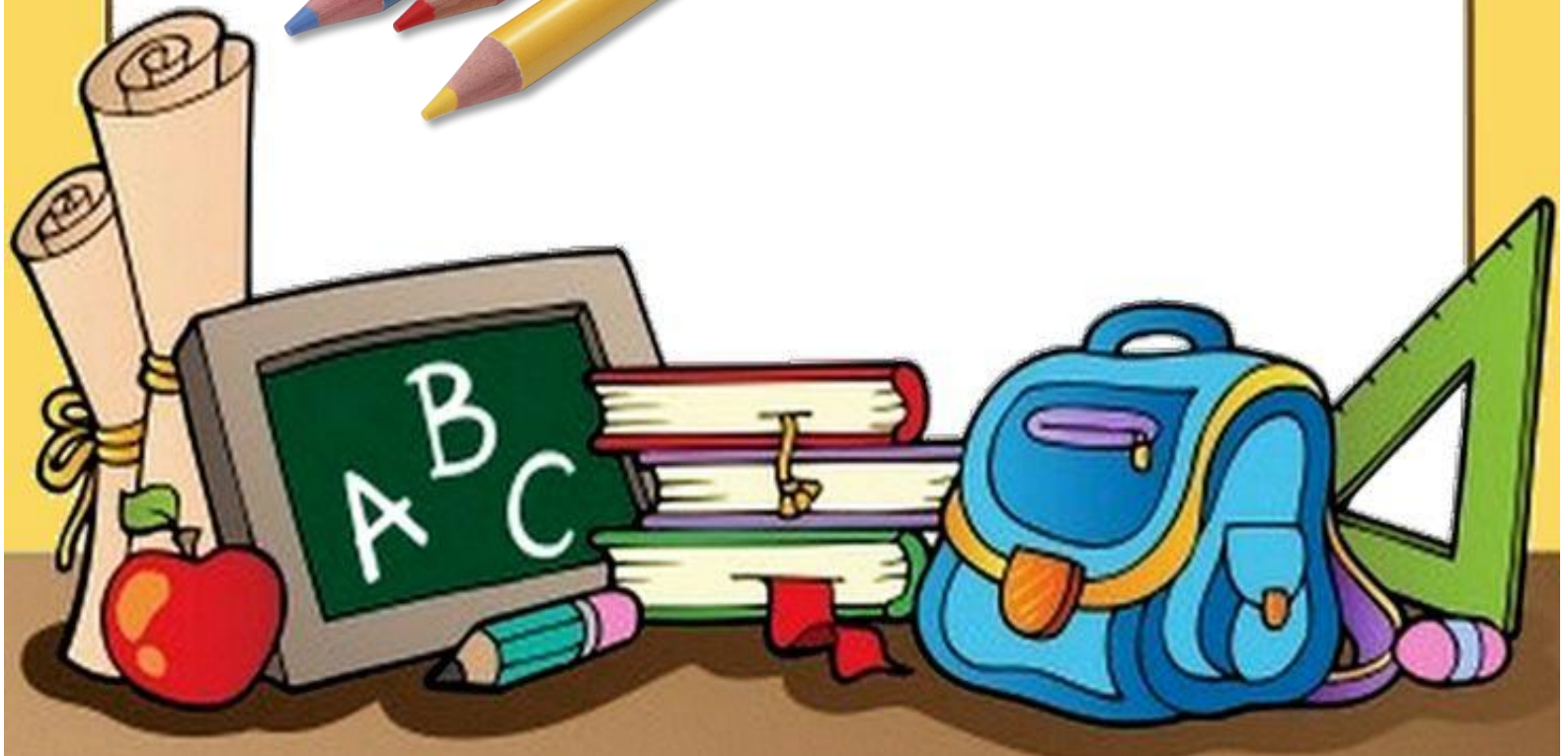

विषय सूची

क्रम संख्या	रचना	रचयिता	पेज
1	सन्देश	अध्यक्षा	1
2	श्रद्धांजलि		2
3	एक छोटी सी मदद, मीठी बोली	अलीम, रुक्सार	3
4	कुछ करना है	कुंदन	4
5	खास जन्मदिवस	अनमोल	5
6	डटकर सामना करना	पूनम	6
7	पढ़ने की लगन	निशा	7
8	मेरा आइडयल कौन है	साहिल	8
9	मेरा जीवन	वंशिका	9
10	मेरा परिवार	राजरतन	10
11	मेरा सबसे अच्छा दिन	मोहम्मद स्वैब	11
12	मेले का मजा	अलीम	12
13	मै और मेरी गाय	कैलाश	13
14	शरारती बच्चा	नीरज	14
15	शिवन्या	नंदनी	15
16	एक दिन ऐसा भी हुआ	रोशनी	16
17	जब मै बड़ा हो जाऊंगा	आर्यन	17
18	डेटा की दुनिया - जेंडर वॉर	फरदीन	18
19	मेरा प्यारा परिवार	हेमलता	19
20	स्कूल का एक दिन	अंजली	20
21	मेरी अच्छी मम्मी	प्रियांशु	21
22	मेरे सपनो की दुनिया	बरकत	22
23	स्पेस में जीवन	सुमन	23

सन्देश

"मेरी कलम से "यह एक ऐसा सफर है कि जो कुछ ऐसे चंद बच्चों ने तय किया है, जिन्हें कभी भी कलम का उपयोग करना नहीं आता था और वे कलम की ताकत से अज्ञात थे।

इस प्रकाशन में ऐसे ही कुछ छात्र आपके समकक्ष रख रहे हैं अपनी जीवन गाथा।

जिस कहानी में वे आपके साथ साझा कर रहे हैं अपने बहुत सारे सपने, तकलीफें और उम्मीद।

फर्श से अर्श तक की यात्रा में यह केवल एक छोटी सी शुरुआत है। अभी बहुत लंबा सफर बाकी है, अभी बहुत सी जंगें इन्हें जीतनी हैं। इन बच्चों के साहस और जज़्बे को हम सब मिलकर कभी भी कम नहीं होने देंगे।

शुभाक्षिका के साथ जुड़े सारे स्पॉन्सर्स और वे सभी लोग जो इन बच्चों का साथ अपनी सूझ–बूझ, सामर्थ्य अनुसार देते रहे हैं, आज बहुत गौरवान्वित होंगे जब वे इन लेखों के माध्यम से लिखित रूप में इन महत्वाकांक्षी छात्रों की मनोकामनाएं पढ़ पाएंगे।

ये वो बच्चे हैं जो ज़मीन पर नहीं रहेंगे; हम सब मिलकर इन्हें इनके लक्ष्यों तक पहुंचाएंगे और जगमगाते सितारे बनाएंगे।

अध्यक्षा

प्रांशु भटनागर

शुभाक्षिका एजुकेशन सोसाइटी

—— श्रद्धांजलि ख़ालिदा को——

“जंग ये जारी रहेगी तब तक

बेटी न होगी सुरक्षित जब तक”

यह पुकार और प्रतिज्ञा हमारी प्यारी बच्ची ख़ालिदा ख़ातून की है, जो 4 जून 2024 को मात्र सोलह वर्ष की आयु में सभी को शोकाकुल छोड़कर इस दुनिया से चली गई। इस समाचार से पूरा शुभाक्षिका परिवार स्तब्ध और अत्यंत दुखी है।

ख़ालिदा का जन्म 02-03-2008 को हुआ था। शुभाक्षिका में वह पाँचवीं कक्षा की छात्रा थी। वह एक बहुत ही शालीन, कल्पनाशील, संवेदनशील और प्रतिभाशाली छात्रा थी। लड़कियों के अधिकारों के प्रति जागरूक थी। समाज में लड़केलड़कियों के भेद को वह बिलकुल पसंद नहीं करती थी और पूरा प्रयास करती थी कि - यह भेदभाव मिट जाए। वह यहाँ के सभी छात्रों के लिए प्रेरणा स्रोत थी। उसने अपनी कविता के माध्यम से भी इस भाव को प्रकट किया था:

“बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,

ये नारा जिस दिन हक़ीक़त होगा

उस दिन हमारा महायज्ञ पूरा होगा।”

ख़ालिदा के इस भाव और निश्चय से प्रेरित होकर शुभाक्षिका के अध्यापकगण ने शुभाक्षिका की वार्षिक पत्रिका छापने का निर्णय लिया, ताकि अन्य छात्र भी उससे प्रेरित होकर अपनी प्रतिभा और कल्पना को सबके सामने प्रस्तुत करने का प्रयास करें।

आज हम ख़ालिदा को अपनी स्नेहपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करते हैं कि वह जहाँ है, खुश रहे। उसके परिवार को इस सदमे से उबरने की शक्ति मिले।

शुभाक्षिका परिवार

एक छोटी सी मदद

एक दिन मैं एक रास्ते से गुजर रहा था। मैने देखा कि एक कुत्ते का बच्चा बारिश में भीग रहा था। मैंने उसे उठाकर एक सुरक्षित जगह ले गया जहाँ बारिश नहीं हो रही थी। मै दौड़कर पास की दुकान पर गया जहाँ से उसके लिए एक दूध का पैकेट और छोटा बिस्कुट का पैकेट लिया। उसे खिलाकर मैं घर की तरफ चला गया। मैं हल्का सा भीग भी गया था पर उसकी मदद करके मुझे बहुत अच्छा लगा।

आलिम
कक्षा 5

मीठी बोली

कोयल मीठे गीत सुनाती ।

कुक - कुक कर मन हर्षाती ।

शहद जैसी है बोली उसकी ।

कोयल गाती तो मन खिल जाता ।

कौआ गाए तो गुस्सा आता ।

रुक्सार
कक्षा – 3

कुछ करना है

कुछ करना है , तो डटकर चल।।.

थोड़ा दुनिया से हटकर चल।।.

लीक पर तो सभी चल लेते है।।.

कभी इतिहास को पलटकर चल।।.

बिना काम के मुकाम कैसा ?

बिना मेहनत के , दाम कैसा ?

जब तक न हासिल हो मंजिल।।.

तो राह में आराम कैसा ?

अर्जुन सा निशाना रख।।.

मन में , ना कोई बहाना रख ।।.

लक्ष्य सामने है बस उसी पर, अपना ठिकाना रख ।।.

सोच मत , साकार कर।।.

अपने कर्मो से प्यार कर।।.

मिलेगा तुझे तेरी मेहनत का फल।।.

किसी और का न इंतजार कर।।.

जो चले थे, अकेले।.

उनके पीछे आज है मेले..... ।।.

जो करते रहे इंतजार.....,

उनकी ज़िंदगी में आज भी है झमेले ।।.

कुन्दन
कक्षा-10

खास जन्मदिन

रीनू नाम का एक लड़का था । आज वह बहुत खुश था कि अगले दिन उसका जन्मदिन था। वह पार्टी के बहुत से प्लान बना रहा था | मन ही मन लिस्ट बना रहा था कि किस किस दोस्त को जन्मदिन पर बुलाएगा|

परन्तु जैसे ही उसने अपने कमरे की बत्ती बुझाई और बिस्तर पर लेटने लगा, उसे अपने पीछे एक साया महसूस हुआ। वह डर गया उसे लगा कि उसके कमरे में कोई भूत घुस गया है| वह इतना डर गया कि सर तक कम्बल ढक कर कांपता कांपता सो गया।

अगले दिन वह सो कर उठा तो उसकी माँ ने बताया कि उसके मामा के बेटे अन्नू और मनू उसके जन्मदिन में शामिल होने आ रहे हैं। रीनू रात का डर भूल कर बहुत खुश हो कर अपना कमरा ठीक करने के लिए अपने कमरे में आया। जैसे ही वह अपना कम्बल सवारने लगा उसे खिड़की में से कोई झाकता हुआ दिखाई दिया। उसका मुंह भूत की तरह काला था और बड़ी-बड़ी सफ़ेद आंखें थीं ।रीनू डर कर पलंग के नीचे छुप गया। थोड़ी देर बाद हिम्मत करके आंखे मीचे-मीचे पलंग के नीचे से भागकर कमरे के बाहर आगया।

तभी उसे अपने मामा के लड़के आते हुए दिखाई दिए। वे उसके तरफ इशारा करके जोर जोर से हँस रहे थे। रीनू कुछ समझ नहीं पाया हक्का बक्का देखता रहा क्यों हँस रहे हो आज मेरा जन्मदिन है। मुझे जन्मदिन कि बधाई देने के स्थान पर हँस हँस कर मेरा मजाक उड़ा रहे हैं।

वे हँसते हुए बोले डरपोक कहीं का! हम तो कल रात को ही तेरे घर आ गये थे। रात को तुम्हें डराने वाला ये अन्नू था और सुबह तुम्हे डराने वाला मैं था। भूत वूत कुछ नहीं होता। भूत डरपोक बच्चों के मन में होता है वास्तव में नहीं।

अनमोल
कक्षा – 10

डटकर सामना करना

मेरा घर स्कूल से थोड़ी ही दूर है। वैसे तो चाची हमें घर से स्कूल तक छोड़ने जाती थी पर एक बार चाची की तबीयत ख़राब हो गई और उन्होंने हमें खुद ही स्कूल जाने को कहा। फिर 2 - 3 दिन हम अकेले ही स्कूल गए। मेरे साथ मेरी बहन भी जाती है। दो दिन तो हम आराम से आ गए और चले गए। तीसरे दिन रास्ते में जहां थोडा सुनसान रास्ता पड़ता है, वहाँ कुछ लोग हमारे पीछे पड़ गए। पहले तो हम दोनों तेज - तेज चलने लगे फिर दौड़ना शुरू किया और जल्दी ही बाजार का रास्ता आ गया जहाँ बहुत सारे लोग थे। वहाँ हम दोनों ने चैन की साँस ली और कहा " बाल बाल बचे" घर जाकर चाची को सारी बात बताई चाची ने तो डर के मारे कह दिया कि जब तक मैं ठीक नहीं होती तुम स्कूल नहीं जाओगे। हमने कहा पर इसमे तो हमारी पढाई खराब होगी पर उन्होंने हमारी बात नहीं मानी। फिर शाम को जब चाचा घर आए तो उन्हें सब बताया उन्होंने हमे समझाया कि हम लडकियों को डरने की बजाय उनका डटकर सामना करना चाहिये। जब हमने कहा कि पर वो तो ताकतवर होते हैं, तो चाचा ने कहा कि ताकत हमारे इरादों में होती है अगर हमने मन में ठान ली ।

चाचा ने हमारा कराटे स्कूल में नाम लिखवा दिया है हम दोनों बहनें अब शाम को कराटे सिखने जाती हैं और किसी से डरती भी नहीं है। हमने स्कूल भी अकेले आना - जाना शुरु कर दिया है।

पूनम
कक्षा - 5

पढ़ने की लगन

राहुल नाम का एक लड़का शहर में एक नहर के किनारे रहता था। उसके पिताजी बहुत बीमार रहते थे। उसकी माँ फल बेच कर पैसे कमाती थी। उसके 3 भाई-बहन थे। इतने पैसों से घर का खर्च चलाना मुश्किल था। राहुल को पढ़ने का बहुत शौक था| वह कुछ दिन स्कूल गया लेकिन खर्चा ना उठा पाने की वजह से माँ ने स्कूल छुड़ा दिया। एक बार वह नहर के किनारे बैठा था। उसने देखा वहाँ बहुत कचरा है। उसने सोचा कि वह कचरा चुन कर पैसे कमा सकता है। अगली सुबह से वह कचरा चुनने लगा ऐसे ही उसने 2 घंटे में उसने बहुत सी बोतले इकट्ठी कर ली और कबाड़ी को बेच दी। उन पैसों से उसने अख़बार खरीदा और पढ़ने लगा जब कुछ पैसे इक्कठे हो गए, तो उसने एक किताब खरीद ली, अख़बार वाले के पास बैठ कर वह किताब पढता और कुछ न समझ आने पर वह अख़बार वाले से पूँछ लेता कर पढ़ लेता। अख़बार वाले ने उसकी पढने की इच्छा देखकर उससे पूछा तुम स्कूल नहीं जाते। उसने बताया कि पैसों की कमी की वजह से नहीं जा पाता। तभी अख़बार वाले ने उसे NGO के बारे में बताया। जहां बच्चों को मुफ्त में शिक्षा मिलती है। उसने कहा की तुम अपनी पढाई भी पूरी कर पाओगे और खर्चा भी नहीं होगा राहुल बहुत खुश हुआ और घर में सबको बताया| उसकी माँ भी बहुत खुश हुई, और उसका दाखिला करवा दिया अब वह रोज स्कूल जाता हैं और मन लगा कर पढ़ता है|

निशा

कक्षा - 5

मेरा आइडियल कौन है?

इस दुनिया में सभी के आइडल होंगे या आने वाले टाइम में आइडल बन सकते हैं। आइडल एक अच्छी मंजिल को चुनने में मदद करता है या आपको उनसे प्रेरणा मिलती है। मैं आपको अपने आइडल के बारे में बताना चाहूँगा। वह बहुत प्रसिद्ध या महान नहीं है। मेरे आइडल का नाम सुभाष सर जी हैं। आप सोच रहे हैं ,कि ये सुभास चन्द्र बोस तो नहीं है। वह बहुत साधारण से व्यक्ति है पर उनकी सोच सुभाष चन्द्र बोस की तरह महान है।

मुझे लगता है कि उन्हें कला का सम्पूर्ण ज्ञान था। हांलाकि वह यह नहीं मानते थे कि मै कुछ भी पूछता था तो बता दिया करते थे। वह कहते थे, कि हमें लोगों को भावनाओ और अनुभवो का एहसास नहीं होता । किसी मनुष्य की सहायता के लिए जरूरी है कि हम उसके छिपे हुए दर्द को पहचाने , यह जानने के बावजूद भी हम इसे जीवन में फॉलो नहीं करते।

हमें समस्याओ से जूझना और उन्हें सुलझाना सीखना है । हिम्मत नहीं हारना है । उन्होंने मुझे जीवन में एक उद्देश्य दिया। उनके द्धारा दिए गये मार्गदर्शन से मुझे पता चला कि मैं फोरन्सिक आर्टिस्ट बन सकता हूँ ।

मैं उन्हें बहुत याद करता हूँ उन्होंने मेरे उद्देश्यहीन और बेरंग जीवन को एक उद्देश्य दिया। मुझमें जीने की कला सिखाई ।

वह कहते हैं कि तुम अपने आइडल को भूल जाना मगर अपने लक्ष्य को कभी नहीं भूलना और हमेशा लक्ष्य के सामने समस्या आये तो उसका सामना करना। मुझे आप सभी को अपना आइडल बताने में बहुत खुशी हुई।

धन्यवाद

साहिल
कक्षा – 10

मेरा जीवन

मेरा नाम वंशिका है । हम 4 बहन और 1 भाई है । हमारी माताजी हमारे लिए बहुत मेहनत कर रही है । क्योंकि जब हम छोटे थे तभी हमारे पिताजी का देहांत हो गया था पहले हम सब स्कूल जाते थे पर पिताजी की मृत्यु के बाद मेरे भाई ने अपना स्कूल छोड़ दिया ताकि मै अच्छे से पढ़ सकूँ और हम सेहतमंद खाना खा सकें|

मम्मी अकेले घर खर्च नहीं चला पा रही थी ,मेरी बहिनों को भी स्कूल छोड़ना पड़ा सब लोग बहुत मेहनत कर रहे है कि मुझे पढ़ा सकें। अब मै अकेले स्कूल जाती हूँ मुझे बहुत बुरा लगता है कि मै तो पढ़ लिख कर अपना जीवन सुधार लूँगी पर मेरे भाई बहन अनपढ रह जायेंगे । आज की तरह मजदूरी करते रहेंगे पर मैं नहीं समझ पाती कि मैं अपने घर के हालत कैसे बदलूँ ।

जब मैं अपनी माँ से ये दुःख साँझा करने की कोशिश करती हूँ तो वह मुझे समझाती है कि तुम पढ़ लिख कर सबकी जिन्दगी सवार देना ।

मैं डॉक्टर बनना चाहती हूँ । अपने परिवार के लिए बहुत सारे पैसे कमाना चाहती हूँ पर साथ ही और गरीब परिवारों की मदद भी करना चाहती हूँ जिसके लिए मै बहुत पढाई करुँगी ।

हे प्रभु! मुझे आगे बढने की हिम्मत दीजिये मेरी सहायता कीजिये ।

हे प्रभु ! कभी किसी बच्चे को मज़बूरी में अपनी पढाई बीच में ना छोड़नी पड़े ।

वंशिका
कक्षा - 5 th

मेरा परिवार

मेरे परिवार में तीन लोग हैं। मैं, मेरी माँ और मेरी बहन है। मेरे पिताजी की मृत्यु हो चुकी है । परिवार का सारा बोझ मेरी माँ पर है । वह पढ़ी लिखी नहीं हैं मजदूरी कर परिवार पालती है। कभी कभी तो हमारे पास खाने के लिए भी पैसे नहीं होते।

सुबह और घरों का काम करती है और थकी हुई घर लौटती है। फिर शाम को भी काम करती है। मुझे अपनी माँ की यह दशा देख कर बहुत दुःख होता है । मैं और मेरी बहन भी उनकी मदद करने की कोशिश करते हैं पर वह करने नहीं देती । कहती हैं तुम अपनी पढाई करो ।

मैं परिवार के लिए कुछ करना चाहता हूँ। मेरे परिवार का मेरे सिवा कोई नहीं है। सोचता हूँ मै भी कोई नौकरी कर लूं परन्तु मुझे बच्चा कहकर कोई नौकरी भी नहीं देता।

मुझे ही मेरे परिवार को संभालना है । कुछ साल बाद बहन की शादी करनी होगी। मैं अपने परिवार को दुनियाँ की सारी खुशियाँ देना चाहता हूँ। मैंने ठान लिया है कि मुझे कुछ बनना है और अपने परिवार को सुखी करना है ।

एक दिन ऐसा आएगा जब मेरी माँ को मजदूरी से छुटकारा मिलेगा वह आराम कर सकेगी ।

मेरी माँ के सुख का सपना मुझे हिम्मत देता है कुछ करके दिखाने की।

राजरतन
कक्षा 5

मेरा सबसे अच्छा दिन

मै जब स्कूल की तरफ से डांस में गया था तो मै बहुत खुश था। यह ख़ुशी मुझे उस दिन से पहले कभी नहीं हुई थी। यह दिन मुझे हमेशा याद रहेगा, मेरे साथ बहुत सारे अध्यापक और अन्य मित्र भी थे! जो मेरे डांस ग्रुप में थे हम इनोवा गाडियों में एरोसिटी एक होटल में गये थे। बहुत बड़ा होटल था एकदम चमकता हुआ हमे रास्ता बताने के लिए होटल का एक कर्मचारी साथ चल रहा था। वह नीले यूनिफार्म में बहुत शानदार दिख रहा था।

चलते चलते हम मेन हॉल में पहुँचे वहां बहुत बड़ा हॉल था और बीच में बहुत बड़ा स्टेज। उसी स्टेज पर हमने डांस किया इतनी तालियाँ बजी इतनी तालियाँ बजी कि मजा आ गया।

इसके बाद हमने खाना खाया वहाँ हमने बहुत नई चीज़ें खाई, हमें उनमें से कई चीज़ों के नाम भी नहीं मालूम थे|

खाना खाने के बाद हमे बहुत सारे गिफ्ट मिले। एक बड़ा सा बैग था उसमे बादाम, काजू, किसमिश और एक बहुत सुंदर स्मार्ट वाच थी मैंने स्मार्ट वाच पहली बार अपनी कलाई में बांधी तो मैं ख़ुशी से नाचने लगा|

बहुत ही मज़ेदार दिन था मैं ये दिन कभी नहीं भूल सकता|

मोहम्मद स्वैब

कक्षा – 3

मेले का मजा

घर के पास लगा था मेला।

इसमें आया चाट का ठेला।

हमने जाकर खाई चाट ।

ऐसे थे ये ठाठ।

घर के पास लगा था मेला।

उसमें आया झूले वाला।

हमने जाकर झूले झूले।

मन में नहीं समाए फूले।

घर के पास लगा था मेला।

उसमे आया एक खिलौने वाला।

हम जाकर लाये चार खिलौने।

खिलौने बड़े सलौने ।

घर के पास लगा था मेला।

हमने जाकर देखा मेला।

मेले जैसा कोई न खेला।

मेला तो भाई मेला ही मेला।

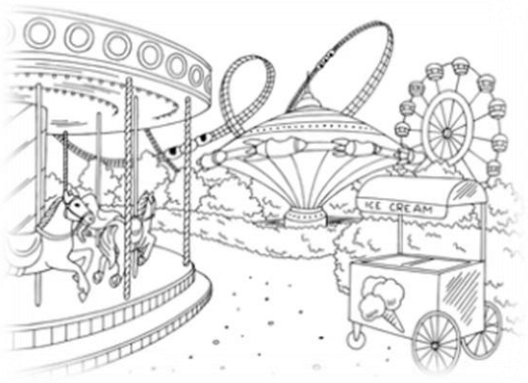

आलिम

कक्षा – 5

मैं और मेरी गाय

मेरे घर में एक गाय थी। वह गाय हमे दूध दिया करती थी। मैं रोज दूध पीता था। मेरी मम्मी थोड़े दूध की दही जमा देती थी। मैं दही भी खाता था। बाकी का दूध हम बेच देते थे। जिससे हमारे घर में कुछपैसे आ जाया करते थे।

मैं उस गाय से बहुत प्यार करता था रोज शाम को उसे हरी - हरी घास खिलाता था। रोज थोड़ी देर उसके पास बैठता था। गाय को प्यार से सहलाता था। वह गाय मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी

कभी मम्मी डांटती या पापा मारते तो मैं अपनी गाय से लिपटकर रो लेता | मुझे लगता जैसे मेरी दोस्त मुझे प्यार से पुकार रही हो|

फिर एक दिन मैंने गाय को बाहर बाँध दिया। जब मैं सुबह सो के उठा और अपनी दोस्त से मिलने बाहर आया तो देखा मेरी गाय वहाँ नहीं थी। उसे सब ओर ढूँढा पर वोह नहीं मिली| मालूम हुआ उसे कमेटी वाले उठा कर ले गए थे।

उस दिन मैं बहुत रोया मेरी मम्मी भी बहुत रोई पर हम कमेटी वालों से उसे वापिस नहीं ला सके|

वो गाय मेरी बहुत अच्छी दोस्त थी। मैं उसके साथ अपना काफी समय बिताता था। मैं और मेरी मम्मी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमारी गाय लौटकर आ जाये।

कैलाश
कक्षा -3

शरारती बच्चा

मेरे स्कूल में एक नीरज नाम का लड़का पढ़ता था। वह बहुत ही शरारती था। वह स्कूल में बच्चो को मारता और लडकियों की चोटी खींचता वह अक्सर ही ऐसा करता अगर कोई भी बच्चा टीचर को बताता तो वह अपने दोस्तों के साथ स्कूल के बाहर उसे मारता।

एक दिन वह स्कूल से घर जा रहा था तभी उसने देखा कि बहुत सारे बन्दर केले खा रहे थे। उसने सोचा कि थोड़ा इनसे भी मजा लिया जाये उसने केला उठाया और दूर फ़ेंक दिया। जब बन्दर उसे उठाने लपके तो उसे पैरों से कुचल दिया वह बार बार ये ही करता रहा। बंदरो को बहुत गुस्सा आया और वह सब मिलकर उसे मारने लगे, उसकी कॉपी किताबें बैग से निकाल निकाल कर फाड़ दी।

फिर बन्दर नीरज पर टूट पड़े , उसे मारने लगे नीरज माफ़ी मांगने लगा रो रो कर, हाथ जोड़ कर चिल्लाता रहा " गलती हो गयी मुझे छोड़ दो जाने दो" पर बन्दर तो थे बन्दर उसे घेर कर मारते ही रहे । उसके शरीर से जगह जगह खून निकलने लगा किसी तरह जान बचा कर भागा।

जब वह रोता रोता घर जा रहा था। तो उसके सारे दोस्त दूर खड़े हँस रहे थे । वह रोते रोते घर पंहुचा वह किसी को कुछ बता भी नहीं सकता था। चुपचाप रजाई ओढ़ कर लेट गया और सोचने लगा क्या मै भी बन्दर हूँ। मै भी सबको बिना सोचे समझे मारता रहता हूँ। आज सब दूर से देखते रहे कोई मुझे बचाने नहीं आया ।

उस दिन नीरज ने अपने आप से वादा किया कि वह बिना मतलब किसी को नहीं मारेगा।

नीरज
कक्षा – 10

शिवन्या

शिवन्या सोलह साल की एक लड़की थी। वह पढाई में अच्छी थी पर अचानक उसके साथ दुर्घटना हो गई, और हादसे में उसके दोनों पैर फ्रैक्चर हो गये जिसके कारण वह कई महीने स्कूल नहीं जा सकी उसे दोबारा चलने में एक साल लग गया, और उसकी एक साल की पढाई छूट गई ।

उसके पिताजी ने फिर से उसका दाखिला करा दिया। पर अब उसके पुराने दोस्त ना होने की वजह से वह बहुत अकेला महसूस करती थी। उसके पुराने साथी अगली कक्षा में पहुँच गए थे वह पीछे रह गयी थी। उसका स्कूल जाने का मन नहीं होता था। उसके घर के सदस्यों ने उसे बहुत समझाया कि वह पढने में इतनी अच्छी है जल्दी ही सब सीख जायगी पर सब बेकार।

वह क्लास में पढाई में सबसे पीछे रह गई थी। अक्सर घर आकर रोती रहती । स्कूल ना जाने के रोज नये बहाने बनाती रहती। उसकी माँ उसे डांटती भी थी पर वह उसे भी अनसुनी कर देती।

एक दिन उसकी टीचर ने उसे अलग बुला कर पूछा कि वह स्कूल से अनुपस्तिथ क्यों रहती है। 1 साल पहले तो ऐसा नहीं था। उसे शत प्रतिशत उपस्तिथि के लिए इनाम मिलता था। शिवन्या कुछ नहीं बोली टीचर बार बार उससे यही प्रश्न पूछती रही |उसे बहुत प्यार से समझाती रही कुछ देर बाद शिवन्या फूट फूट कर रोने लगी उसने टीचर को बताया कि वह पढाई में पिछड़ गई है । सब बच्चे कक्षा में प्रश्नों का उत्तर देते हैं पर उसे समझ ही नहीं आता वह होमवर्क भी ठीक से नहीं कर पाती इसलिए उसे क्लास में आने से उसे डर लगता है। टीचर ने प्यार से उसे गले लगा लिया और शिवन्या से वादा किया कि वह स्कूल के बाद रोज़ एक घंटा उसे पढायेगी, और बहुत जल्दी वह पहले जैसी होशियार बन जाएगी ।

वास्तव में यही हुआ दो महीने बाद छमाही परीक्षा में प्रथम आई शिवन्या।

शिवन्या ने हिम्मत और सफलता पाई।

नंदनी
कक्षा-5

एक दिन ऐसा भी हुआ

मैं स्कूल जा रही थी। तो मुझे रेलवे स्टेशन पर बहुत लोग दिखाई दिए। वे लोग गरीब थे। मुझे उन लोगो पर बहुत तरस आया क्योकि वे लोग रेलवे स्टेशन पर भीख मांग रहे थे। इस लिए मेरा मन उन लोगो की मदद करने का कर रहा था पर मैं उन लोगो की मदद नहीं कर पाई। क्योकि मैं अपने स्कूल जा रही थी। पर जब मैं अपने स्कूल से आ गई तो मैने देखा की उन लोगो को ठंड लग रही थी। और ठंड भी बहुत हो रही थी जनवरी का महीना था। मैं उन लोगों के पास गई और उन लोगों को कुछ रुपए दिए। उन लोगों को कुछ खाने की चीज़े दी। तो उन लोगों की आँखों से आंसू गिरने लगे |उन लोगों ने मुझे बहुत सारा आशीर्वाद दिया। और मुझे धन्यवाद बोला |

रोशनी
कक्षा 3

<u>जब मैं बड़ा हो जाऊंगा</u>

कल मैं जब अपने दोस्त के घर गया तो मैने देखा उसका घर बहुत बड़ा था परिवार के हर सदस्य के लिए अलग अलग कमरा था| हर कमरा बहुत सजा हुआ था |मेरा दोस्त मुझे अपने कमरे में ले गया |फ्रिज में से निकाल कर ठंडी ठंडी आइसक्रीम ला कर मुझे दी |और अपने कमरे का टीवी चला दिया |"वाह वाह इसके पास तो अपना अलग टीवी भी है" |हमने साथ बेठ कर क्रिकेट मैच देखा |मजा आ गया हम दोनों हर बॉल पर पलंग पर कूदते रहे |कोई रोक टोक नहीं थी |अपने अलग कमरे का मजा ही कुछ और है |पता ही नहीं चला कम शाम हो गयी |मैने अपने दोस्त से कहा" बहुत देर हो गयी है मम्मी डाँटेगी "मेरा दोस्त हँस कर बोला "फ़िक्र नहीं ,कार से चले जाना|" मैं मन ही मन बहुत खुश हो गया |उसके लम्बी सी चमचमाती कार जब मेरे घर के पास रुकी और में बाहर निकला ,मेरे दोस्त मुझे आंखे फाड़ फाड़ कर देख रहे थे और मैं किसी बड़े साहब की तरह घर ओर चल पड़ा |घर पहुचा और अपने टूटे फूटे घर में बैठ कर सोचने लगा कि वो सब कितना अच्छा था। ये सब मेरे पास क्यों नहीं है अगर मैं अपने घर में देखू तो एक बेड है जिस पर मैं और पापा सोते हैं। मम्मी नीचे सोती है। मेरे घर में तो कार नही है। फ्रिज भी नहीं है। मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता कि मेरी मम्मी नीचे सोती है ,और जब ठंडा पानी पीना होता है। तो दूसरो के घर से लाती है |में जानता हूँ कि अगर मुझे ये सब कुछ चाहिये तो मुझे पहले बड़ा होना पड़ेगा और मन लगा कर खूब पढना पड़ेगा |फिर मैं अच्छी नौकरी करूँगा और जब मैं अच्छी नौकरी करूँगा तो मैं खूब पैसे कमाऊँगा और अपनी सारी इच्छाओं को पूरी करूँगा।

आर्यन

कक्षा - 3

डेटा की दुनिया जेंडर वॉर

आज के समय ऑनलाइन मीडिया पर जेंडर वॉर चल रहा है। ऐसे पुरषो की कमी नहीं, जिनका यह मानना है, कि वे उत्कृष्ट है। आज के दौर में भी लोग मानते है, कि बच्चे पालना और खाना बनाना औरतो का काम है , भले ही वे औरते उनकी तरह नौकरी करती हो ।ऐसे पुरुष मानते है कि महिलाओँ में नेतृत्व क्षमता नहीं होती, अगर वर्कप्लेस पर महिलाओँ को सराहा जाता है या प्रमोशन मिलता है, तो उसकी वजह उनका बेहतर पेशेवर होना नहीं है, बल्कि उन्हें दूसरे कारणो से ऐसे रिवार्ड मिलते है। फॅमिनिज़ीम के जरिए इस सोच से दुनिया में लम्बी लड़ाई चली आयी है। फॅमिनिज़म इस सोच पर आधारित है की पुरुष और महिलाये सभी बराबर है, इस बुनियादी बात को समझने की कोशिश काफी वक़्त से हो रही है, लेकिन फिर भी आपको समाज में ऐसे पुरुष मिल जायेगे जो शारीरक बनावट या कुछ कार्यो का हवाला देते हुए इसका विरोध करते हैं। ऐसे लोग कहते हें महिलाये अच्छी मकैनिक नहीं हो सकती। कंस्ट्रक्शन वर्क्स में पुरुष ही होते हैं। ये लोग बड़ी चालाकी से विज्ञानं में महिलाओ के योगदान पर पर्दा डालने की कोशिश करते है .ये लोग भूल जाते है की आज दुनिया जैसी दिख रही है, इसमें दोनों ही जेंडर के लोगो ने बड़ी भूमिका निभाई है। अफ़सोस की बात है के आज भी औरतों को अपने हक़ के लिए घर ,बाहर संघर्ष करना पड़ रहा है। फॅमिनिज़म से जुड़े लोगो ने इस बराबरी की बात को राजनीतिक, आर्थिक और यहाँ तक की कला के जरिये व्यापक तौर पर पहुँचाने की कोशिश की ,लेकिन आज भी समाज के कुछ लोग है, जिन्हे देखकर लगता है, की यह लड़ाई और लम्बी चलने वाली है।

फरदीन
कक्षा 10

मेरा प्यारा परिवार

मेरा एक छोटा सा परिवार था मैं ,मेरे मम्मी पापा और मेरी दो छोटी बहनें। हम सब एक साथ बहुत ख़ुशी से रहते थे। एक दिन मेरे पापा को काम पर जाते समय पीछे से एक गाड़ी ने टक्कर मार दी ,कुछ लोग मेरे पापा को अस्पताल ले गए |पर वो नहीं बचे मुझे नहीं पता था कि मैं अपने पापा को हमेशा के लिए खो दूँगी। जब मेरे पापा की मृत्यु हुई उसके कुछ सालों बाद ही मेरी मम्मी की भी मृत्यु हो गई। मैं और मेरी बहनें हम तीनो बिल्कुल अकेले हो गए। कोई भी हमे अपना नहीं रहा था |कुछ लोगो ने तो हमें अनाथ आश्रम में रहने के लिए बोला फिर मेरी चाची की माँ ने कहा कि मैं तुम्हे अपने साथ रखूँगी। वो हम तीनो बहनों को चाची के घर ले गई |अब हम तीनो बहनें अपने चाचा -चाची के साथ रहती है। चाचा -चाची हमारा बहुत अच्छे से ध्यान रखती है। फिर चाची को एक शुभाक्षिका एजुकेशनल सोसाइटी एनजीओ का पता चला |चाची ने हम तीनो बहनों का दाखिला एनजीओ में करवाया अब हम तीनो बहनें उस एनजीओ में पढते है |एनजीओ की तरफ से हमारा सारा खर्चा उठाया जाता है |एक दिन स्कूल से घर जाने में मुझे थोड़ी देर हो गई। चाची ने उस दिन मुझे बहुत डॉटा ,बहुत गुस्सा किया। मुझे बहुत बुरा लगा मैने सोचा कि अगर मेरी मम्मी होती तो मुझे ऐसे नहीं डाँटती। मैं बहुत रोई और बिना खाना खाए सो गई। अगले दिन जब मैं सुबह उठी ,चाची मेरे लिए चाय ले कर आयी तो मैंने सोचा कि अगर मेरी मम्मी होती तो गलती करने पर वो भी मुझे डाँटती। मुझे चाची की बात का बुरा नहीं मानना चाहिए था|

हेमलता
कक्षा 3

स्कूल का एक दिन

मेरा स्कूल दूसरे स्कूलो से कुछ अलग है। यह सुबह 1 बजे न शुरू होकर 8:30 बजे शुरू होता है। यहाँ केवल पड़ने के बाद छुटी नहीं मिलती यहाँ हमे और कई अन्य चीजे सिखाई जाती है। जैसे क्राफ्ट , सिलाई , डांस आदि। दुसरे स्कूलो की तरह हमे लंच नहीं ले जाना पड़ता। हमे बहुत स्वादिस्ट खाना मिलता है। हमारी प्रधानाचार्य इस बात का खास ध्यान रखती है। की खाना सेहतमंद हो ,हमारे आसपास मौजूद सभी लोग हमारा बहुत ध्यान रखते है। यहाँ पर ज़िंदगी के लिए तैयार किया जाता है। हमारा हर दो महीने में एक बार स्वास्थ्य जांच भी होता है। हमारी श्याम को टूशन क्लास भी लगती है। जिसमे हम कार्ये करते है। और समय आने पर अध्यपिका से पूछ सकते है। में स्कूल रोज जाती हूँ। हर दिन आने वालो को पुरस्कार भी दिया जाता है। और रोज स्कूल जाने से हम हर दिन कुछ नया सीखते है।

अंजली
कक्षा5

मेरी अच्छी मम्मी

मेरी मम्मी मुझे अच्छी लगती है। क्योकि मेरी मम्मी मुझे प्यार करती है। एक दिन मैं स्कूल जा रहा था। रास्ते में एक कुत्ते का बच्चा घायल मिला उस कुत्ते के बच्चे को में घर ले गया। मेरी मम्मी ने उसको मरहम लगाया कुत्ते का बच्चा चार पाँच दिन में ठीक हो गया। मैने कुत्ते के बच्चे को उसकी मम्मी के पास छोड़ दिया। उसकी मम्मी खुश हो गई। और में घर चला गया में खाना खाकर सो गया सुबह उठकर कुत्ते के बच्चे के साथ एक दो घन्टे खेला और मैने उसकी मम्मी के पास छोड़ दिया। उस दिन से वह कुत्ते का बच्चा मेरा दोस्त बन गया।

कितना अच्छा दिन था वह !

प्रियांशु
कक्षा- 3

मेरे सपनो की दुनिया

अगर दुनिया गुलाबी रंग की होती तो सोचो कितना अच्छा होता, सब कुछ गुलाबी रंग का होता पानी का रंग गुलाबी होता ,पेड़ो के पत्ते भी गुलाबी रंग के होते। सब लोग गुलाबी हो जाते।

ये सोचते सोचते मै सो गई |रात को मुझे सपना आया कि सारी दुनिया गुलाबी हो गयी है। मेरे भाई का बस्ता ,मेरी मम्मी की साड़ी ,मेरी बहन के बाल हमारा घर और मेरी साइकिल सब गुलाबी हो गये ,में बहुत खुश हुई ,अगले दिन जब में घर से बाहर निकली तो मेरा तोता जिसे में हर रोज हरी मिर्च खिलाती थी। वह भी गुलाबी हो गया था। मेरा काले रंग का कुता जिसके साथ में खेलती थी। वह भी गुलाबी हो गया था। यह देखकर मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा क्योंकि वह कितना सुंदर था। ऊपर देखा तो आसमान भी गुलाबी था। नीचे देखा तो पार्क की घास भी गुलाबी थी में घबराकर घर के अंदर आ गयी |गुलाबी गुलाबी मम्मी ने मुझे दूध और गर्म गर्म पराठा खाने के लिये दिया |दूध भी गुलाबी था। छी यह्न कैसा नाश्ता है ?मुझे नहीं खाना |स्कूल जाने के लिए बैग उठाया तो वो भी गुलाबी ,मेरी रंग बिरंगी किताबे पूरी गुलाबी हो गई थी -

में डर गई और चिल्ला कर उठ बैठी |पास सोई मेरी माँ भी जाग गई पूछा -क्या हुआ ,क्या हुआ |मैं हँसने लगी मैं बहुत खुश थी कि सब कुछ वैसा का वैसा ही था। रंग बिरंगा |

बरकत

कक्षा5

स्पेस में जीवन

सुनीता विलियम अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के माध्यम से अंतरिक्ष से जाने वाली भारतीय मूल की दूसरी महिला बनी। उनकी 8 महीने की अंतरिक्ष यात्रा ने भारत में अंतरिक्ष यात्रियों के खान - पान रहन सहन को लेकर उत्सुकता जगा दी। अंतरिक्ष में लोग कैसे रहते है किस तरह स्वास्थ्य समस्यो से उनका सामना होता है?

1.शून्य गुरुत्वाकर्षण -इसमें वस्तुए एक जगह रुकी चिपकी नहीं रहती। उन्हें बांधकर रखना पड़ता है। इसलिए खान-पान की वस्तुए हल्की होनी चाहिए और इन पर वॉयरस या फ़ंगस नहीं होना चाहिए।

2. अंतरिक्ष यात्री हमेशा जुकाम जैसा महसूस करते है लकिन होता नहीं, बस एहसास होता है। किसी चीज़ में कोई गंध नहीं आती। इस समस्या को छोड़ दे तो भूख लगना और पखाने और मूत्र की इच्छा होना बिलकुल धरती जैसा है।

3. संसार के पहले अंतरिक्ष यात्री रूस के यूरी गागरिन ने अंतरिक्ष में 1 घंटा 48 मिनट का ही वक्त बिताया था। वहां रहते हुए उन्होंने एल्युमीनियम के तीन टूबस से खाना खाया था। अब जमे हुआ- सूखे खाने के टुकड़े ले जाते है।इससे खाना हल्का हो जाता हें। और जिवाणू मर जाते हें। और स्वाद या पोषण पर ज्यादा फर्क नहीं पड़ता।

4. व्यायाम - अंतरिक्ष में व्यायाम भी जरूरी हें |हड्डिया कमजोर हो जाने का खतरा बना रहता हें। upper और lower body की एक्सरसाइज का एक नियमित कार्यक्रम हर अंतरीक्ष यात्री को अपने दैनिक अनुभासन में शामिल करना चाहिये।

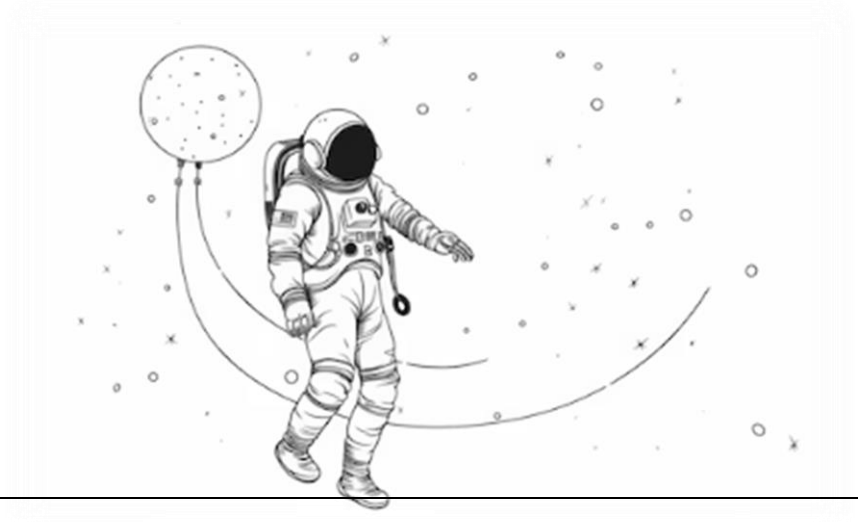

सुमन
कक्षा- 5

प्रिय पाठकों

इस पत्रिका के माध्यम से हमारे बच्चों के जीवन के कुछ पहलू, उन्हीं की कलम द्वारा, आपके समक्ष हैं। उद्देश्य है आपको इन बच्चों की दृष्टि से उस बचपन की एक झलक दिखाना जिसमें न खेल-खिलौने हैं, न परी-कथाएं, न गुड्डे-गुड़ियाँ और न कहानियों की किताबें। सच तो ये है कि समाज में जहां एक ओर कुछ बच्चे परिवार के प्रेम से ओत-प्रोत, सभी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न जीवन व्यतीत कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ बच्चों को भरपूर भोजन तथा बीमारी में दवाइयाँ और देखभाल भी उपलब्ध नहीं। शुभाक्षिका की कार्यकारी समिति के सदस्य आपसे प्रार्थना करते हैं कि अपने व्यस्त जीवन से कुछ समय निकाल कर इन बच्चों से जुड़ें और इनमें से किसी का हाथ थामें। किसी भी प्रकार का सहयोग इन बच्चों के लिए सार्थक होगा - किसी एक बच्चे की पढ़ाई तथा लालन पालन हेतु आर्थिक सहयोग अथवा सभी के लिए कुछ योगदान।

इस ईश्वरीय कार्य में आपसे जुड़ने के इच्छुक
शुभाक्षिका परिवार

शुभाक्षिका एजुकेशनल सोसाइटी

गली न. 4/124 गुरु तेग बहादुर कॉलोनी (सरदार कॉलोनी), ब्लॉक-जे, सेक्टर-16, दिल्ली-110089

बस्ती विकास केंद्र, गेट न. 2, अमरज्योति कॉलोनी, शाहबाद दौलतपुत, बवाना रोड, नई दिल्ली-110042

संपर्क: 9810201542, 9818695102, 9873033306, 9599970797